

पद्म भूषण डॉ. शिवमंगलसिंह 'सुमन' स्मृति  
सद्भावना व्याख्यानमाला



## सद्भावना 2020



भारतीय ज्ञानपीठ, उज्जैन

[www.vyakhyanmala.bhartiyagyanpeeth.com](http://www.vyakhyanmala.bhartiyagyanpeeth.com)

दिनांक 19 नवम्बर गुरुवार से 25 नवम्बर बुधवार 2020

## सद्भावना 2020

### अनुक्रमणिका

क्र.	विषय	वक्ता	पृ.क्र.
1.	सर्वकों की आजादी	श्री अमर हथीव धरम गोपीचारी एवं सत्यजोषी	...12
2.	अध्यक्षीय उद्बोधन	श्री सदा विजय आर्य	...15
3.	शिक्षा क्यों और शिक्षा क्या ?	श्री सत्य प्रकाश भारत सवरय, भारत जोड़ो अभियान दिल्ली	...16
4.	अध्यक्षीय उद्बोधन	डॉ. शिव चौरसिया वरिष्ठ साहित्यकार	...19
5.	गांधी विचार एवं हमारी न्याय प्रणाली	श्री सत्य रंजन धर्माधिकारी रिवल न्यायपुरि, कुर्ना, उच्च न्यायालय	...20
6.	अध्यक्षीय उद्बोधन	डॉ. महेश शर्मा प्राचार्य शासकीय कलेजियस कन्या महाविद्यालय, उज्जैन	...23
7.	गांधी और शिक्षा	डॉ. विश्वास पाटील शिक्षाविद, संतुबर, महाराष्ट्र	...24
8.	अध्यक्षीय उद्बोधन	डॉ. शैलेन्द्र शर्मा कुलपनुरासक विक्रम विश्वविद्यालय, उज्जैन	...27
9.	भारत में ई - शासन की खूबियां और अमानवीय पहलू	डॉ. सी. जयरामकर बाबू अध्यक्ष हिन्दी विभाग, पश्चिमी विश्वविद्यालय, पुद्दुचेरी	...30
10.	अध्यक्षीय उद्बोधन	डॉ. बी. के. शर्मा पूर्व मंत्रक संघालय शिक्षा, उज्जैन	...33
11.	महिला सशक्तिकरण	डॉ. पल्लवी पाटील शिक्षाविद, सातुर महाराष्ट्र	...35
12.	अध्यक्षीय उद्बोधन	डॉ. पुष्पा चौरसिया वरिष्ठ साहित्यकार	...38
13.	गांधी और मनुष्य जीवन	कुमार शुभमूर्ति अध्यक्ष, मूलन वर मण्डि, महाराष्ट्र	...40
14.	अध्यक्षीय उद्बोधन	डॉ. अखिलेश कुमार पांडेय कुलपति विक्रम विश्वविद्यालय, उज्जैन	...43

## महिला सशक्तिकरण

दिनांक : 24 / 11 / 2020

डॉ पल्लवी पाटील  
शिक्षाविद्, लातूर महाराष्ट्र

मैं अपना व्याख्यान इस बात से आरंभ करती हूँ कि प्रायः संध्या के समय पर घर के बुजुर्गों द्वारा घर में दीप जलाने की बात की जाती है। इसके पीछे भाव यह होता है कि वह दीप अंधेरे को तो दूर करेगा ही साथ ही घर में आने वाली नकारात्मक या दुष्ट प्रवृत्तियों का विनाश करके सद प्रवृत्तियों को कायम करेगा। ठीक इसी प्रकार यह अखिल भारतीय सद्भावना व्याख्यानमाला भी एक ऐसा एक मंच है जिसमें प्रज्वलित विचार दीप समाज में नई रोशनी लाने का और नई घेतना जागृत करने का कार्य करते हैं। आज महिला सशक्तिकरण विषय पर बात करने से पहले यह आवश्यक है कि हम इसका अर्थ समझ लें। हम वर्ष के 365 दिनों में से नवरात्रि के सिर्फ नौ दिनों में माँ की आराधना, उपासना, वंदन, पूजन, जागरण आदि करते हैं। शेष दिनों में भी यही क्रम जारी रखते हुए देवी समान पूजनीय नारी को सम्मान और सुरक्षा प्रदान करें तो नारी सच्चे अर्थों में सशक्त हो जाएगी। विडंबना यह है कि सिर्फ 9 दिनों में नारी शक्ति की पूजा के बाद अन्य दिवसों में समाचार पत्र नारी पर हो रहे अत्याचारों की खबरों से भरे हुए रहते हैं। लगातार हो रही इन घटनाओं से देश में महिलाओं की सुरक्षा-व्यस्था पर प्रश्न चिन्ह लग रहे हैं। एक जिज्ञासा उत्पन्न होती है कि माँ आखिर किसी अन्य प्राणी की सवारी न करते हुए सिर्फ शेर की सवारी ही क्यों करती है? शायद यह इस बात का संकेत या संदेश है कि भय बनाए रखना आवश्यक है। जिस देश में नारी शक्ति के इतने अनुपम उदाहरण रहे हैं उस देश में अत्याचार करने वाले लोगों को किसी बात का भय नहीं है। भारतीय इतिहास में कई ऐसे उदाहरण हैं जो महिला सशक्तिकरण को परिभाषित करते हैं। वेद कालीन स्त्री, उपनिषद कालीन स्त्री, महाकाव्य काल की स्त्री, स्मृति काल की स्त्री, बौद्ध काल की स्त्री, मध्य युग की स्त्री और आधुनिक युग की स्त्री में हमें नारी के सशक्त स्वरूप के दर्शन होते रहे हैं। वैदिक समय की बात करें, तो उसमें स्त्रियों को हम वेदों का पठन करते हुए देख पाते हैं और यह भी पाते हैं कि उस काल में महिलाओं का स्थान बहुत ही गरिमामयी रहा है। इसी काल में उसे पूजनीय और वंदनीय स्वरूप प्राप्त हुआ। उपनिषद काल आते-आते भी लगभग यही स्थिति रही। महाकाव्य काल आते-आते स्थिति थोड़ी सी बदली। इस काल में आंशिक रूप से बहु पत्नी प्रथा बढ़ी। राजा दशरथ की तीन पत्नियां थी, किंतु उनके पुत्र मर्यादा पुरुषोत्तम राम ने एक पत्नी व्रत का पालन किया। द्रोपदी वह पहली महिला थी जिसने यह प्रश्न सामने रखा कि मैं एक स्त्री हूँ या दाव पर लगाई जाने वाली एक वस्तु हूँ? हालांकि कई विद्वानों ने द्रोपदी के चरित्र को घमंडी बताया था, किंतु द्रोपदी के व्यक्तित्व को घमंडी नहीं बल्कि स्वाभिमानी महिला के रूप में देखना ज्यादा उचित होगा। स्मृति काल आते-आते स्त्रियों की स्थिति बहुत अच्छी नहीं दिखाई दी। स्त्रियों के लिए यज्ञोपवित संस्कार पर प्रतिबंध लगाया गया था। कुछ मात्रा में बाल विवाह की



प्रथा भी शुरू हो चुकी थी। बौद्ध काल की यदि हम बात करें, तो इस काल में यह धारणा प्रभावी हो चुकी थी कि जिस स्त्री को पुत्र की प्राप्ति होगी उसी स्त्री को स्वर्ग की भी प्राप्ति होगी। हालांकि स्वयं गौतम बुद्ध ने भी इस बात का खंडन किया था किन्तु फिर भी ऐसी गलत धारणा पनपती रही। इतिहास में थोड़ा सा आगे के दौर में चलते हुए अब हम मध्य युग की बात करते हैं। यह युग हर दृष्टि से बहुत ही पतन का युग था। कबीर, तुलसी आदि कई सृजनकारों ने इस काल को साहित्यिक दृष्टि से भले ही स्वर्ण कालीन युग बनाया हो किंतु यदि हम इस काल का साहित्यिक पक्ष छोड़ दें और सामाजिक पक्ष की बात करें तो मुगलों के आक्रमण के बाद महिलाओं की स्थिति और भी ज्यादा बिगड़ती हुई प्रतीत होती है। इस युग में स्त्री को शिक्षा से वंचित रखा गया। स्त्री के लिए पर्दा प्रथा शुरू हो गई, बाल-विवाह शुरू हो गए। सती प्रथा भी इस युग में आरंभ हुई। यहां तक कि स्त्रियों का देह शोषण भी इस युग में बहुत हुआ। यदि आधुनिक काल खंड में देखा जाए तो महारानी झांसी की रानी या फिर दुर्गा सेना का नेतृत्व करने वाली झलकारी बाई जैसी साहसी महिलाओं के दर्शन होते हैं। ये ऐसी साहसी महिलाएं रही हैं, जिन्होंने अपने पराक्रम से भारत की स्त्रियों के समग्र इतिहास को स्वर्ण अक्षरों में लिखने का कार्य किया है। इतिहास में थोड़ा सा आगे चलने पर सावित्रीबाई फुले का नाम सामने आता है। इस नाम को लिए बिना भारत में स्त्री का इतिहास कभी पूर्ण नहीं हो सकता है। स्त्री को शिक्षा दिलवाने की पहल सावित्रीबाई फुले ने की थी। इतिहास में थोड़ा सा आगे चलने पर हम पाते हैं कि स्वतंत्रता संग्राम में भी अनगिनत स्त्रियों ने अपना महत्वपूर्ण योगदान दिया है। अरुणा गांगुली जिन्होंने 1931 के मध्य में स्वतंत्रता आंदोलन में छलांग लगाई और 1942 में भारत छोड़ो आंदोलन में भी उनके सहित कई महिलाओं ने अंग्रेजों से सीधे तौर पर संघर्ष किया। नेताजी सुभाष चंद्र बोस की आजाद हिंद सेना के नेतृत्व करने वाली कैप्टन लक्ष्मी को हम लोग कैसे भूल सकते हैं? कैप्टन लक्ष्मी सहगल ने नेताजी के आजाद हिंद सेना का महिलाओं की टुकड़ी का सफल नेतृत्व किया। भारतीय इतिहास में ऐसे अनगिनत नाम हैं जो अपने साहस, अपने धैर्य, अपनी कर्मठ मनोवृत्ति, अपने धीरज का परिचय देते हुए स्त्रियों के महान उदाहरण के रूप में प्रस्तुत होते हैं। इतिहास में आगे बढ़ने पर हम देखते हैं कि दीपा मलिक एक सशक्त उदाहरण है, जिन्होंने अघेड़ उम्र में ट्यूमर हो जाने के बाद, दो बच्चों की मां होने के बाद भी, शरीर में 130 ऑपरेशन होने के बाद भी, अपनी पीठ से पैर तक 186 टांके लगने के बाद भी, कमर के नीचे का हिस्सा पूरी तरह से सुन्न होने के बाद भी शॉट पुट और अन्य खेलों में अपना ऐसा कौशल दिखाया कि उनके प्रयासों को नमन करने का मन होता है। राष्ट्रीय और अंतरराष्ट्रीय स्पर्धाओं में भारत को कई पदक दिलवाने वाली दीपा मलिक जैसी महिलाओं के अनगिनत उदाहरण हैं जिन्होंने भारत का गौरव और भारत का मान बढ़ाया है। अरुणिमा सिन्हा एक बहुत ही महत्वपूर्ण व्यक्तित्व है जिन्होंने यह सिद्ध किया है कि शारीरिक रूप से दिव्यांग होने का अर्थ यह नहीं है कि मानसिक रूप से भी कोई दिव्यांग हो, क्योंकि मन की शक्ति शरीर की सभी कमियों को पूर्ण कर सकती है। 20 या 22 वर्ष की आयु में अरुणिमा सिन्हा के साथ ट्रेन में एक

हादसा हुआ था। कुछ गुंडों ने उनके सोने की चेन को खींचने का प्रयास किया। छीना झपटी में वह ट्रेन के नीचे गिर गई। इलाज के दौरान उन्हें अपना एक पैर कटवाना पड़ा। अरुणिमा ने यह सोच लिया था कि इस घटना के बाद भी जीवन में कुछ करके ही दिखाना है। कितने आश्चर्य की बात है कि मन की इच्छा शक्ति के कारण ही अरुणिमा सिन्हा ने सिर्फ माउंट एवरेस्ट ही नहीं बल्कि विश्व की अन्य बड़ी-बड़ी चोटियों पर भारत का ध्वज सफलतापूर्वक लहराया। ऐसे उदाहरणों को देखने के बाद हम यह कतई नहीं कह सकते हैं कि महिलाएं कमजोर पड़ गई हैं, निशक्त हो चुकी हैं, असुरक्षित हैं या असहाय हैं। जब-जब ऐसी इच्छा शक्ति वाली महिलाओं के उदाहरण हमें दिखाई देंगे तब- तब महिला सशक्तिकरण का एहसास हर युग में हमें होता रहेगा। हमारे देश में नारी पर हो रहे विभिन्न अत्याचारों के लिए कई-कई प्रकार की धाराएं हैं, किंतु प्रश्न यह उठता है कि इतनी धाराएं होने के बाद भी देश में हर 56 या 57 मिनट में एक बलात्कार की घटना हो रही है। प्रतिवर्ष 17 से 20 हजार छोटी छोटी नाबालिक लड़कियों के अपहरण की घटनाएं हो रही हैं। 60: कामकाजी महिलाओं को उनके कार्यस्थल पर शोषण का सामना करना पड़ रहा है। यह सभी आंकड़े चिंताएं उत्पन्न करते हैं। यह मूल्यांकन करना बहुत आवश्यक हो गया है कि इतनी अधिक धाराओं, इतने अधिक कानून और हमारे सशक्त संविधान के बाद भी यह घटनाएं निरंतर क्यों बढ़ रही हैं? समाचारों में निरंतर यह सुनने को मिल रहा है कि नशे की प्रवृत्ति की ओर अग्रसर होने में महिलाओं की संख्या पुरुषों से भी अधिक हो रही है। आश्चर्य है कि ऐसी गलत मानसिकता के बचाव में एक मशहूर अभिनेत्री ने तो यह भी लिखा है कि इसमें कुछ बुराई नहीं है। समाचार पत्रों या टीवी चैनल्स को चाहिए कि ऐसे विचार प्रसारित ना करें। विचारों में आ रही ऐसी विकृति निश्चित रूप से चिंता उत्पन्न करती है और युवा छात्राओं को गलत दिशा की ओर लेकर जाती है। हमें चाहिए कि हम युवा पीढ़ी को ऐसे महान उदाहरणों के बारे में बताएं जो भारत में नारी सशक्तिकरण के महत्व को व्यक्त करते हैं। मैं युवा छात्राओं से कहना चाहती हूँ कि वह अपने रोल मॉडल उन्हें बिलकुल भी ना बनाएं जो आपको चारित्रिक पतन की सीख देते हैं। मैं तो विज्ञापनकर्ताओं से भी कहना चाहूंगी कि वे ऐसे व्यक्तियों को अपने विज्ञापन में सम्मिलित करें जिन्होंने वास्तविक रूप से समाज में नए आदर्श स्थापित किए हैं। युवा पीढ़ी को सही दिशा में ले जाना, उन्हें संस्कारित करना हम सभी का दायित्व है। संस्कारित समाज और सम्य समाज में ही महिलाएं सुरक्षित रहेंगी। जब तक समाज में स्त्रियों को संपूर्ण सुरक्षित वातावरण हम नहीं दे पाएंगे तब तक उनका सही अर्थों में सशक्तिकरण नहीं हो पाएगा।



थोड़ा सा अभ्यास,

बहुत सारे उपदेशों से बेहतर है ।